International Journal Of Creative Research Thoughts
Volume 1, Issue.2,Feb. 2013 **ISSN:-2320-2882**

ORIGINAL ARTICLE

रामदरश मिश्र तथा रा. रं. बोराडे के उपन्यासों में ग्रामीण राजनीति के बदलते संदर्भ

सचिन गपाट

प्रोजेक्ट फेलो, हिंदी विभाग
डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)

सारांश

राजनीति का स्वरूप तेजी से परिवर्तित हो रहा है । राजनीति अब संसद से पंचायत तक पहुँच चुकी है । इसके द्वारा अनेक याजनाओं की घोषणाएँ हो रही हैं । देश के समूचे विकास के लिए यह केवल कागजों पर ही भरसक प्रयास कर रही है । स्वाधीनता के समय राजनीति जिन लक्ष्यों को लेकर चली थी, उन्हें पूरा करना तो दूर रहा उल्टा उसे ठंडे बस्ते में डालकर यह केवल आडंबर का ढोल पीट रही है । अब यह जनसेवा को छोडकर धन कमाने के व्यवसाय में परिवर्तित हो रही है । राजनीति के शीर्ष पर बैठे नेता धन, प्रतिष्ठा, वैभव तथा सत्ता की मदहोशी में राष्ट्र निर्माण का संकल्प भूल रहे हैं । कुछ चुनिंदा मुट्ठीभर लोगों को छोडकर राजनीति के कुचक्र का शेष ग्रामीण जनता शिकार हो रही है । न्याय, स्वातंत्र्य, समता, बंधुता और धर्मनिरपेक्षता को लेकर चलनेवाली राजनीति अब दिशाहीन हो रही है । ग्रामीण राजनीति में आ रहे ऐसे बदलाव के विभिन्न संदर्भ हिंदी के रामदरश मिश्र तथा मराठी के रा.रं. बोराडे जी के उपन्यासों में मिलते हैं ।

प्रस्तावना

आजादी के बाद हमारे देश की राजनीति में काफी परिवर्तन हुआ है । अँग्रेजों के हिमायती और आजादी के दुश्मन रहे भूतपूर्व साहूकार, जमींदार, सेठ, पूँजीपति आदि शोषकों ने स्वतंत्र भारत की राजनीति में प्रवेश किया है । राजनीति में ऐसे लोगों को प्रवेश मिलने से उनकी शोषक वृत्ति, पैसा कमाने की प्रवृत्ति बरकरार रही है । इससे आम आदमी का राजनीति से मोहभंग हो गया है । ऐसी स्थिति में आदर्श मानवीय मूल्यों को लेकर चलने वाली राजनीति में स्वार्थ पनपने के कारण राजनीति धीरे–धीरे मूल्यहीन हो रही है । उसमें स्वार्थ, सत्ता, पद और पैसा कमाने की प्रवृत्ति बढ़ती ही जा रही है । इससे पूँजीपतियों के हाथों में राजनीति का सूत्र मजबूत होता जा रहा है । राजनीति दिन ब दिन गांधी, नेहरु, आंबेड़कर, जयप्रकाश नारायण आदि के विचारों से दूर ही जा रही है ।

राजनीति में स्वार्थ के लिए, सत्ता के लिए विविध हथकंड़ों को अपनाया जा रहा है । न्याय, स्वातंत्र्य, समता, बंधुता और धर्मनिरपेक्षता ये मूल्य राजनीति से गायब हो रहे हैं । राजनीति में जनसेवा के नामपर सत्ता के लिए गलाकाट स्पर्धा हो रही है । मिश्र जी के 'पानी के प्राचीर' उपन्यास का मुखिया, 'जल टूटता हुआ' उपन्यास का दीनदयाल, दौलतराय और महीप सिंह तथा बोराडे जी के 'रिक्त अतिरिक्त' उपन्यास का गणपतराव घाडगे जैसे नेता भोले–भाले ग्रामीणों को लूटकर फल–फूल रहे हैं । मिश्र जी के 'आकाश की छत' उपन्यास का यश मूल्यहीन राजनीति के प्रति सोचता है कि ''राजनीतिक और दार्शनिक दोनों का सरलीकरण करके उसे राष्ट्रीय और सार्वभौम बना देते हैं, केवल उसे आदमी नहीं बना पाते ।''[1] अतः राजनीति में ईमानदारी, निःस्वार्थ भाव, सच्चाई, सेवाभाव, निष्ठा, जनहित, प्रतिबद्धता जैसे तत्त्वों का अभाव निर्माण हुआ है । इससे ''राजनीतिक आजादी के बाद हमारे शाश्वत अर्थात् वयोवृद्ध मूल्य–चक्रों के पहिये टूट गए और एक नई पूँजीवादी व्यवस्था के शोषण और कर मुनाफे वाली धुरियों पर राजनीतिक मूल्य–पुंज घूमने लगे हैं ।''[2] इससे ग्रामीण जीवन बदजात हो रहा है । शोषण की चक्की में सामान्य ग्रामीण पीस रहा है । शोषण के साथ ही साथ ग्रामीण जीवन में वैरभाव को भी बढ़ावा मिल रहा है । राजनीतिक मूल्यहीनता के ऐसे अनेक परिणाम सामने आ रहे हैं । जिससे मिश्र जी के 'जल टूटता हुआ' उपन्यास के सतीश जैसे सत्य, न्यायप्रिय और ईमानदार नेता टूट रहे हैं । 'सूखता हुआ तालाब' उपन्यास के देवप्रकाश गॉव छोड़ रहे हैं ।

मूल्यहीन होती ग्रामीण राजनीति में अब भ्रष्टाचार ही शिष्टाचार बन रहा है । झूठ, बेईमानी, धोखा–धड़ी, भ्रष्टाचार ये अब राजनीति के अंग बन रहे हैं । यह जनतंत्र धीरे–धीरे लूट तंत्र में बदल रहा है । गॉव से लेकर पूरे देश में राजनीतिक मूल्यहीनता का प्रचलन बढ़ रहा है । राजनीति का प्रयोग अपने निजी स्वार्थ सिद्ध करने के लिए हो रहा है । अब तो विरोध के लिए विरोध की राजनीति सामने आ रही है । बोराडे जी के 'महानगाव' उपन्यास में चिमाजी को अवचितराव का विरोध के लिए विरोध सहना पड़ता है । 'कथा एका तंटामुक्त गावाची' उपन्यास में भी प्रकाशभाऊ बिराजदार को कल्याणराव गांवडे का विरोध के लिए विरोध सहना पड़ता है । इस विरोध की राजनीति को पहचानते हुए इस उपन्यास के पुलिस अधिकारी अरविंदराव राठोड कहते हैं कि ''गावंडे साहब, आपके आचरण से, बोलने से ऐसा लगता है कि आप अपना गॉव शासन की टंटा मुक्त योजना में सफल नहीं होने देंगे ।''[3] अतः विपक्ष यदि चुनाव में हार जाता है तो वह सत्ताधारी पक्ष को विकास योजनाओं में सहयोग करने की अपेक्षा केवल विरोध के लिए विरोध करता है । जिससे केवल विरोध की राजनीति बढ़ रही है । इस विरोध की राजनीति के कारण अनेक विकास योजनाएँ सामान्य ग्रामीणों तक पहुँचने में असफल सिद्ध हो रही है ।

राजनीति के बदलते स्वरूप में चुनाव प्रक्रिया भी परिवर्तित हो रही है । चुनाव जनसेवा के आधार पर लड़ने की अपेक्षा शक्ति, धन, बेईमानी, कूटनीति, जातीयता, गुंडई आदि के आधार पर लड़े जा रहे हैं । ऐसे चुनाव का यथार्थ चित्र मिश्र जी के 'जल टूटता हुआ' और 'सूखता हुआ तालाब' उपन्यास में मिलता है । 'जल टूटता हुआ' उपन्यास में पंचायत के चुनाव में दीनदयाल चुनाव स्थल पर लोगों के लिए लाई–गट्टे और गुड़ की दुकान लगाता है । दलसिंगार, महावीर और सुग्गन तिवारी वोट देने के लिए आनेवाले लोगों की आवभगत करते हैं। ये मतदाताओं को लालच दिखाकर आकर्षित करते हैं । इसके साथ ही साथ चुनाव नजदीक आते ही मतदाताओं को अपने पक्ष में करने के लिए दॉव–पेंच, षड़यंत्र अपनाते हैं । चुनाव की इस काली छाया में लोग एक–दूसरे का खेत भी काटते, कटवाते हैं । अँधियारे में कटती फसल को देखकर

Please cite this Article as : *सचिन गपाट , रामदरश मिश्र तथा रा. रं. बोराडे के उपन्यासों मेंग्रामीण राजनीति के बदलते संदर्भ* **: International Journal Of Creative Research Thoughts (Feb. ; 2013)**

सतीश कहता है कि ''पंचायत की शुरुआत भी नहीं हुई कि ये अब इन्साफ शुरू हो गए । महीप सिंह को देखो और देखो इस दीनदयाल को । आजादी के दुश्मन हैं ये, जनता के दुश्मन हैं ये, मगद देखो अधिकार पाने के लिए कैसे पैंतरे बदल रहे हैं ।''[4]

चुनाव में अनेक राजनीतिक हथकंड़ों के साथ ही साथ अब तो शराब का प्रयोग भी हो रहा है । मतदाताओं को वोट के बदले में शराब दी जा रही है । बोराडे जी के 'कथा एका तंटामुक्त गावाची' उपन्यास में कल्याणराव गावंडे टंटा मुक्त गॉव समिति के अध्यक्ष पद के लिए होनेवाले चुनाव में शराब का प्रयोग करता है । वह बाळबा लोकर से कहता है कि ''चुनकर आने के लिए लायक होना आवश्यक नहीं लगता बाळबा ।''5 शराब के साथ ही साथ अब वोट के बदले नोट का प्रचलन ग्रामीण चुनाव में बढ़ रहा है । जाति और पैसों के दबाव से अब चुनाव लड़े जा रहे हैं । इस कारण ग्रामीण राजनीति अपनी दिशा खो रही है । ''विकास के लिए पद न होकर पद प्राप्ति के लिए राजनीति का प्रयोग होने लगा है ।''[6]

बदलती राजनीति में दल बदलने की प्रवृत्ति को भी बढ़ावा मिल रहा है । यदि किसी एक पार्टी में अपना स्वार्थ पूरा नहीं होता तो नेता लोग पार्टी बदल रहे हैं । अपने राजनीतिक स्वार्थ के लिए वे किसी भी पार्टी में प्रवेश करने के लिए हमेशा तैयार ही रहते हैं । मिश्र जी के 'जल टूटता हुआ' उपन्यास में रामकुमार कॉग्रेस पार्टी को छोड़कर ''सोशालिस्ट पार्टी में चला जाता है ।''[7] वह देखता है कि सोशालिस्ट पार्टी के कई लोग चुनाव जीतने के लिए कॉग्रेस में प्रवेश कर रहे हैं । बोराडे जी के 'रिक्त अतिरिक्त' उपन्यास का सरपंच अपने राजनीतिक स्वार्थ के लिए, गणपतराव घाडगे की पार्टी में भविष्य न होने के कारण त्र्यंबकराव सातपुते की पार्टी में प्रवेश करता है । वह नाथाप्पा से कहता है कि ''मैं त्र्यंबकराव सातपुते साहब की पार्टी में सम्मान के साथ प्रवेश कर रहा हूँ ।''[8] इससे स्पष्ट होता है कि ग्रामीण राजनीति में भी दल बदलने की प्रव्ृत्ति बढ़ रही है । अनेक नए दल तैयार हो रहे हैं । नेताओं की दलबदलू प्रवृत्ति के बारे में मिश्र जी के 'सूखता हुआ तालाब' उपन्यास के देवप्रकाश कहते हैं कि ''नेताओं का तो यही हाल रहा है – क्या गॉव के स्तर पर और क्या देश के स्तर पर ।''[9]

राजनीति में अब झूठे वादे और आश्वासन देने का प्रचलन भी बढ़ रहा है । राजनेता वोट पाने के लिए विकास कार्यों का, रोजगार का, कर्ज माफ करने का तथा अन्य बहुत सारे आश्वासनों का लालच देकर मतदाताओं को फँसा रहे हैं । ये मतदाताओं को आकर्षित करने के लिए आश्वासनों को पोस्टर भी लगा रहे हैं । अपने राजनीतिक प्रचार–प्रसार के लिए हर राजनेता और पार्टी अब पोस्टर युद्ध खेल रही है । लेकिन सत्ता और कुर्सी मिलने पर वे जनता की सुध लेना भूल रहे हैं । मिश्र जी के 'बीस बरस' उपन्यास में दामोदर देखते हैं कि ''आजादी के चालीस–पैंतालीस साल बाद भी ये सड़के उसी तरह धूल–धूसरित और कटी–फटी पड़ी हैं । सरकार ने कुछ वर्ष पहले इतना जरूर किया कि जनता को आश्वस्त करने के लिए इन पर खड़ंजा बिछा दिया ।''[10] ग्रामीण परिवेश के विकास की भी ऐसी ही दशा हो गई है । योजनाओं की घोषणा और उनका कागजों पर ही विकास हो रहा है । चुनिंदा लोग ही इन योजनाओं से लाभान्वित हो रहे हैं । इससे ग्रामीण जीवन में विषमता फैल रही है । स्वाधीन भारत की राजनीति इसे बढ़ावा दे रही है ।

राजनीति के ऐसे बदले संदर्भों में पूँजीपतियों, नेताओं, सेठ, साहूकारों को सही दिशा देने के लिए मिश्र जी ने प्रारंभ में सतीश जैसे गांधीवादी पात्रों का सर्जन किया है । लेकिन 'आकाश की छत' उपन्यास तक आते–आते वे इस स्थिति को बदलने के लिए हिंसा का भी समर्थन करने लगते हैं । इस उपन्यास का कॉमरेड यश से कहता है कि ''तुम ठीक ही कहते हो कि हमें कभी–कभी सेठ को भी मारना होता है । हम अहिंसावादी नहीं हैं, हमारे रास्ते में यदि कोई पहाड़ बनकर अड़ ही जायेगा तो हम अपनी शक्ति से उसे भी उड़ाने की कोशिश करेंगे, न समझौता करेंगे ।''[11]

बोराडे जी पूँजीपति, राजनेता और राजनीति को सही दिशा देने के लिए पढ़े–लिखे पात्रों का सर्जन करते हैं । वे 'महानगाव' उपन्यास का चिमाजी, 'कथा एका तंटामुक्त गावाची' उपन्यास के प्रकाशभाऊ बिराजदार जैसे युवाओं के हाथ में नेतृत्व देकर राजनीति को सही दिशा देना चाहते हैं । इसके साथ ही साथ वे ग्रामीण पढ़े–लिखे युवाओं की ओर सकारात्मक दृष्टि से देखते हैं ।

मिश्र तथा बोराडे जी के उपन्यासों में अभिव्यक्त बदलती ग्रामीण राजनीति के विवेचन पश्चात् निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि ग्रामीण राजनीति मूल्यहीन हो रही है । उसने अपने आदर्श और मूल्य छोड़ दिए हैं । राजनीति में पैसों के बल पर गलत लोगों को प्रवेश मिल रहा है । इससे सत्यप्रिय और ईमानदार नेता टूट रहे हैं । ऐसे में ग्रामीण राजनीति में अब तो भ्रष्टाचार ही शिष्टाचार बन रहा है । विरोध के लिए विरोध की राजनीति का प्रचलन तेजी से बढ़ रहा है । जिससे गॉव के लिए निर्मित अनेक योजनाएँ विफल हो रही है । चुनाव में जाति, पैसा, शराब और षड़यंत्रों का प्रयोग हो रहा है । राजनीति में दल बदलने की प्रवृत्ति भी दिन ब दिन बढ़ रही है । आश्वासनों–वादों का झूठा बोलबाला फैलने लगा है । सत्ता पाने के लिए अब पोस्टर युद्ध भी शुरू हुआ है । ऐसे परिवर्तनों से राजनीति से नीति गायब हो रही है । केवल 'राज' शेष रह गया है । इससे एक ओर देश की ग्रामीण जनता का विकास प्रभावित हो रहा है तो दूसरी ओर गॉव का स्नेहभरा वातावरण धूल–धूसरित बन रहा है ।

ग्रामीण राजनीति में हो रहे ऐसे बदलावों को दोनों उपन्यासकारों ने पूरे यथार्थ के साथ चित्रित किया है । राजनीति की बिगड़ती दशा को सही दिशा देने के लिए मिश्र जी ने सतीश जैसे न्यायप्रिय और ईमानदार युवाओं का समर्थन किया है । बोराडे जी ने पढ़े लिखे युवाओं द्वारा सकारात्मक परिवर्तन की अपेक्षा को प्रस्तुत किया है । उन्होंने ग्रामीणों के संगठन पर भी बल दिया है । इस प्रकार दोनों उपन्यासकारों के उपन्यासों में ग्रामीण राजनीति का यथार्थ प्रकट हुआ है ।

संदर्भ संकेत

1. आकाश की छत – रामदरश मिश्र, चतुर्थ संस्करण, पृ. 23
2. क्यों कि समय एक शब्द है – डॉ. रमेश कुंतल मेघ, प्र. सं., पृ. 342
3. कथा एका तंटामुक्त गावाची – रा. रं. बोराडे, प्रथमावृत्ती, पृ. 81
4. जल टूटता हुआ – रामदरश मिश्र, प्र.सं., पृ. 161
5. कथा एका तंटामुक्त गावाची – रा. रं. बोराडे, प्रथमावृत्ती, पृ. 6
6. अनुसंधान (त्रैमासिक शोध पत्रिका) अंक–5, जनवरी–मार्च 2011, पृ.23
7. जल टूटता हुआ – रामदरश मिश्र, प्र.सं., पृ. 30
8. रिक्त अतिरिक्त – रा. रं. बोराडे, पहिली आवृत्ती, पृ. 109
9. सूखता हुआ तालब – रामदरश मिश्र, प्र.सं., पृ. 78
10. बीस बरस – रामदरश मिश्र, प्र.सं., पृ.7
11. आकाश की छत – रामदरश मिश्र, प्र.सं., पृ. 59